श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ-

परमपावनप्रेमध्वनि

जिसको

श्रीस्वामी शाश्वतानन्द गिरिने रचकर

"लक्ष्मीनारायण" यन्त्रालय

मुरादाबादमें

छपाकर प्रकाशित करी.

प्रथम वार १०००, सं० १९६६.

Printed by S. L. G. L. at the L. N. Press-Moradabad.

निवेदन ।

शाश्वतानन्द गिरि नाम वाला, श्रीमत्परमहंसपरिव्राजका-चार्य श्रीस्वामिरिशालगिरिजी महाराज का अनुचर शिष्य वा सेवक इनके चरणकमलों को पूजने वाला इस मन बुद्धिके संवादको लिखता हूं।

हरिध्वनि जैसा कोई सार पदार्थ नहीं है इस ध्वनिसे मन शीघ्र एकाग्र होजाता है, मुमुक्षुओंको प्रेम पूर्वक इस ब्रह्मका चिन्तन ही कर्तव्य है।

जले विष्णुः स्थले विष्णुः विष्णुः पर्वतमस्तके ॥
ज्वालामालकुले विष्णुः सर्वं विष्णुमयंजगत् ॥

श्रीगणेशायनमः। ओं श्रीगुरुचरणकमलेभ्योनमः॥

ओं अथ श्रीपरमपावनप्रेमध्वनि

प्रारम्भः।

अथ श्रीस्वामी शाश्वतानन्दगिरि विरचितः।

सच्चित आनन्द शिव ब्रह्म भगवान्॥ टेक॥

पूजन अस्तुति वहुविधि करके प्यारा शिवों मनावों जी॥ १॥

स्थूल देहको रथ बनाके इन्द्रिय अश्व लगावों जी॥

साज प्राण मनकरूं सारथी तुम बैठ शिवोंपै जावों जी॥ २॥

दर्शन पाय साज अति ओं हर हर हर गावोंजी॥

शुद्धभावका दीपक करिके बाती शील बनावोंजी॥ ३॥

प्रे०

॥१॥

शान्तितेल भरूं साप्रीती सोहंब्रह्म ज्योति जगावोंजी ॥
लोकलाजकी धूप दिखाकर समता थाल सजावेंजी ॥ ४ ॥
दया पुष्प अरु कुमकुमा प्रीती अस्तुति शिवकी गावेंजी॥
काम क्रोध मद मोह लोभकूं नैवेद गोविंदको चढावोंजी॥ ५ ॥
दीनदयाल जगतके स्वामी महिमाकर यह ध्यावोंजी॥
ध्रुव प्रह्लादकी रक्षा कीनी अब मैं कित बऊ जावोंजी ॥ ६ ॥
गजराजके बंधन काटे द्रौपदीलाज जितावोंजी ॥
प्रेम अकर्षण करके जी तुम खैंच शिवोंको ल्यावों जी ॥ ७ ॥
यातो मिले प्राणप्यारा नहींतो प्राण गँवावोजी ॥
होय दयाल दरस प्रभु दीजे तब आत्मसुख तुम पावोजी ॥ ८ ॥
तुम विन है प्रभु कौन हमारा शेकर विनय सुनावोंजी ॥
कर्त्ता हर्त्ता हो जगपालक छोड़ तुझे कित जावेंजी ॥ ९ ॥

ध्व०

॥ १

पतितउधारण नाम तुम्हारा यों कहि विनय सुनावोंजी ॥
ममता मोह निवारो हमरा मैं बलिहारी जावोंजी ॥ १० ॥
वागादिक्क निरभय कीजे गुणानुवाद प्रभु गावेजी ॥
संतसमागम करके इनमें मिथ्याभाव भुलावोंजी ॥ ११ ॥
अस्ती भाती है प्रिय प्यारा ताको कंठ लगावोंजी ॥
नामरूप की मिटी कल्पना सर्व ब्रह्म यह ध्यावोंजी ॥ १२ ॥
जनम मरणके संशय मेटूं परमपद तुम पावोंजी ॥
पुण्य पाप दो ईंधन कीजे अग्निज्ञान जलावोंजी ॥ १३ ॥
भस्म बनाय लगावों तनको शंकर रूप दिखावोंजी ॥
ओम्नाद मैं लेकर मुखमें बैठ एकांत बजावोंजी ॥ १४ ॥
एक ब्रह्म नास्ति द्वितिया ऊंची धुनी सुनावोंजी ॥
सोहं सोहं डमरू बाजै अनहद मंगल गावोंजी ॥ १५ ॥

भेदाभेदकी त्याग कल्पना ब्रह्मानन्द सुख पावोजी ॥
वामाशुक जो देव मुनीगण तैसे काल बितावोजी ॥ १६ ॥
ज्ञान वैराग धरो दृढमनसे ब्रह्मपद तुम पावोजी ॥
जन्म सफल तब होय हमारा ब्रह्म ज्ञान तब पावोंजी ॥ १७ ॥
जगतवासना तजिके सगरी ब्रह्मबिच तुम मिलजावोजी॥
अर्ज हमारी खुशी तिहारी वारम्वार यही सुनावोंजी ॥ १८ ॥
शिवों निरंजन भवदुखभंजन हरिहर देव मनावोजी ॥
मिटी वासना ज्ञानभयो जब सोहं स्वरूप होजावोजी ॥ १९ ॥
आठपहर तुम आत्मामें मिलके शिवोहं ध्वनी लगावोजी ॥
अन्दर बाहर पूर्ण स्वामि द्वितिया भाव भुलाओजी ॥ २० ॥
पांचकोश देह तीन नियारा ब्रह्मात्मचित्त लावोजी ॥
सर्वब्रह्म यह दृष्टि हमारी झगडा भेद मिटावोजी ॥ २१ ॥
शाश्वतानन्द यह बांछ उचार बिचस्वरूप मिलजावोजी॥

सर्वब्रह्म यह दृष्टि हमारी झगड़ा भेद मिटावोजी ॥ २१ ॥
शाश्वतानन्द यह शुद्ध उचार निजस्वरूप मिलजावोजी ॥
पूजन अस्तुति वहु विधि करके प्यारा शिवों मनावोजी ॥ २२ ॥
दोहा—प्रेमध्वनि यह सार है,जो कोइ पढै सुजान ॥
कहत सरति यह परमानन्द लेयो महान ॥ २३ ॥

इति श्रीअलौकिक परमपावनप्रेमध्वनि भाषा श्रीस्वामि
शाश्वतानन्दगिरि विरचित समास.
ॐ शान्तिः!शान्तिः!!शान्तिः!!!

अथ श्रीविश्वनाथाष्टकप्रारम्भः ॥

ॐशाश्वत पूर्णआदि अन्त मध्य जो तीनकाल ममसाथ॥
साक्षी आत्मा ब्रह्म नित ॐ हर हर हर काशीनाथ ॥ १ ॥
पांचकोश आतीत जो वेद संत कह गाथ ॥
सो शिव साक्षी मैं आत्मा ॐ हर हर हर काशीनाथ ॥ २ ॥

वपू तीनगुण तिननके इन्द्रियन्यामक नाथ ॥
स्वप्रकाश रविलोकवत ओं हर हर हर भवानीनाथ ॥ ३ ॥
ब्राह्मण मंत्रभाग जो वेद चार रुचि साथ ॥
मुनिवर ध्यावें आपको सो मैं ब्रह्म अपार ॥ ओंहर ३ गिरिजानाथ ४
उत्पति पालन संहार यह खेल तुमारा नाथ ॥
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म तुम ओं हर हर हर गौरीनाथ ॥ ५ ॥
माया यंतररूपमें जग भ्रमै सो चाबी तुमरे हाथ ॥
चिदविलास स्वरूप जो सबमें व्यापै आप॥ओंहर३काशीनाथ ६
घंटा भेरी आदि तुम तुमहिं बजाओ नाथ ॥
शिवोहं शिवोहं अस्मि ध्यान नित ओंहर हर हर गिरिजानाथ ७
काया काशीमें तुमरहो बुद्धि गिरिजा के साथ ॥
न्यामक हो सब देह जगतके ओं हर हर हर काशीनाथ ॥ ८ ॥

मन वाणीके तुम गम्य नहीं स्वप्रकाश तुम नाथ ॥
सच्चित आनन्द ब्रह्म इक सोई सरतिनाथ ओंहर ३ गिरिजानाथ ९
प्रकट भये शिवः आत्मा कियो भेद भ्रमवास ॥
निर्मल आतमज्ञानते ब्रह्मधाम तुमपाय ओंहर ३ काशीनाथ॥ १०॥
पंचमी श्रावणमासकी रची वृहस्पतिवार ॥
अष्टक पूराकरके अर्पण करा भवानीनाथ ओंहर ३ गिरिजानाथ॥
अष्टक काशीनाथको जो पढै सुनै चितलाय ॥

इति श्रीविश्वनाथअष्टक भाषा स्वामि शाश्वतानन्दगिरि
विरचित समास ओं ॥ शान्तिः!शान्तिः!!शान्तिः!!!

आत्मात्वं गिरिजामतिः सहचराः प्राणाः शरीरंगृहं,
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः॥
सचारः पदेयाप्रदाक्षिणावा धस्ताःत्राणि सर्वागिरो-

यद्यत्कर्म करोमितत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम् ॥ १ ॥

अर्थ—यह शरीर आपका घर शिवालय है. इस शरीर ॥ सदा शिवरूप सच्चिदानन्द आत्मा आप हो।बुद्धि श्रीपार्वती-जी हैं।आपके साथ चलने वाले नौकर प्राण हैं ये जो मैं विषया-नंदके वास्ते विषयभोक्ता हूं याने जो खाता हूं पीता हूं स्पर्श-करता हूं देखता हूं सुनता हूं सूंघता हूं बोलता हूं स्पर्शकरता हूं यही में आपकी प्रदाक्षिणा है जो कुछ मैं बोलता हूं यह सब आपकी स्तुति करता हूं। जो जो और भी मैं कर्म करता हूं हे चन्द्रशेखर ! सर्व प्रकार आपका ही मैं आराधन करताहूं आप आशुतोष हो जल्दी मुझपर कृपा करो जिस आपकी कृपासे मैं विदेह मुक्तिको प्राप्त हूंगा ॥

आयुः कर्म च वित्तञ्च विद्या निधनमेव च ॥

पञ्चैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः॥ १ ॥

राग खम्माच ताल३ ।

अनहद धुनी सिरपर बाजरही एजी २ बाजरही अरु गाज रही ॥ टेक ॥ बाजत शंख मृदंग बंसरी घन गर्जन अति छाज रही। सुनकर मस्त भया मन मेरा अनहद चंचलता सब भाज गई ॥ अनहद तनके धर्म कर्म सब छूटे लोक वेदकी लाजगई। अनहद ध्वनि सिरपर० ॥ शाश्वतनन्द गिरा गम नाहीं शून्य समाधि विराज रही ॥ अनहद० ॥३॥

मेरी सुरत गगनमें जायरही एजी जायरही अरुधायरही॥टेक॥
त्रिपुटी महलमें चढ़कर देखा जगमग जोत जगायरही।
अमृत बरसे बादल गरजे बिजली चमक मन भायरही ॥
दसवें महलमें सेज पियाकी चुन चुन फूल बिछायरही ।

शाश्वतनन्द देहसुध बिसरी सहजस्वरूप समाय रही ॥

राग खम्माच ताल३।

मुझे लगन लगी पिया पावनकी।
एजी पावनकी घर लावनकी ॥ टेक ॥
छोड़ काज अरु लाज जगतकी।
निशादिन ध्यान लगावनकी ॥ १ ॥ मुझे लगन० ॥
सुरत उजाली खुलगई ताली।
गगन महलमें जावनकी ॥२॥मुझे लगन लगी०॥
झिल मिलकारी जोत निहारी।
जैसे बिजली सावन की ॥३॥मुझे लगन लगी०॥
शाश्वतनन्द मिटी सब प्यासा।
निरखत छवि मनभावनकी ॥४॥मुझे लगन लगी०॥

रागकसूणी ताल३।

पिया मिलनके काज आज मैं जोगन बन जाऊंगी ॥ टेक ॥
हार सिंगार छोड़कर सारे, अंग विभूत रमावूंगी ॥
सिंगी सेली पहर गले में, दर दर अलख जगावूंगी ॥पिया०
काशी मथुरा हरिद्वार सब तीरथ नावूंगी ॥
जाय हिमाचल करूं तपस्या इस तनको खूब सुकावूंगी॥पिया०
ऋषि मुनियोंके आश्रम जाकर, खोज पियाकी लगावूंगी ॥
अंदर बाहिर सब जग ढूंढू अब नहीं अटकावूंगी॥पिया० ॥
निश दिन उसका ध्यान लगाकर सब दिन दर्शन पावूंगी ॥
शाश्वतनन्द पिया घर लाकर आनंद मंगलगावूंगी॥पिया०॥

राग मंगल ताल ३।

शिव भोला भंडारी साधो,शिव भोला भंडारी रे ॥टेक॥शिव०

प्रे० ध्व०

बृक दानवने करी तपस्या, वर दीना त्रिपुरारी रे ॥
जिसके शिरपर हाथ लगावै भस्म होय तन सारीरे ॥शिव०॥
शिवके सिरपर हाथ धारणकी, मनमें दुष्ट विचारी रे ॥
भागे भागे फिरत चहुं दिश शंकर लागे दैत्य डर भारी रे।शिव०॥
गिरिजारूप धार हरिबोले बात असुरसे प्यारी रे ॥
जो तुम मुझको नाच दिखावो, होजाउं नार तुमारी रे॥शिव०॥
नाच करत अपने सिरकर धारे,भस्म भयो मति मारी रे ॥
शाश्वतनन्द देत जोई वर मांगे शिवभक्तन हितकारी रे॥

राग जंगला ताल ३ ।

आज सखी वृन्दावनमें हरि, रसभरी बैन बजावतहै री ॥टेक॥
सात सुरों को संग ताल मिलाकर,राग रागनी गावतहै री।आ०
लंबी धुन सुनाय गोपियनकी, यमुनातीर बुलावतहैरी।आ०

चांद चांदनी रात मनोहर, मिलकर रास रचावतहैरी॥आज०॥
शाश्वतनंद दरसके कारण सुर विमान चढ़ आवतहै री॥आज०
दिल जिसके में सोक बना है अपना रूप उन जाना क्या ॥॥
आनन्द ब्रह्म जब समझा आपको फिर दिलमें घबड़ानाक्या १

इति भजनविलास ।

अथ दोहे दिलभर लिख्यते ।

श्रुति ईशके चरणमें, निश दिन रहो लगाय ।
निजानन्द पावो यही, खोजत इसी उपाय ॥ १ ॥
गुरूचरण हिरदयधरो, हरदम करो विचार ।
निजानन्दको जानकर, उतरोगे भवपार ॥ २ ॥
पूरण सेवा जो करै, श्रवण करै जरूर ।
निजानन्दकी लहरमें, मग्न रहै भरपूर ॥ ३ ॥

धन यौवन यों उड़त है, जैसे उड़त कपूर ।
निजानन्दको छोड़कर रे, क्यों चाटे जगधूर ॥ ४ ॥
उत्तम तन को धारकर, रहे भूल में सोय ।
इस ब्रह्ममिलावन देहको, दियो विषय में खोय ॥ ५ ॥
उत्तमता तो यही है, जो समझें आपन आप ।
मैं ब्रह्म इस बोधसे, जरा न लागें पाप ॥ ६ ॥
इस बैरी संसारका, पारावार न होय ।
मूल जड़ों से छेदकर, रहो नींदभर सोय ॥ ७ ॥
ज्ञान कुहाड़ा हाथ ले, करियो इसका छेद ।
अविद्या विद्या जानकर, पढियो उत्तर वेद ॥ ८ ॥
ज्ञानरूप शुभ पुत्रको, उपजावै जो लोक ।
आनन्द होय इस पुत्र से, मिटजाय मनका शोक॥ ९ ॥

दुखदायक इस पुत्रका, यत्न करो मत कोय ॥
आदि अंत और मध्यमें, कष्ट महामन होय ॥१०॥
जो प्रारब्ध संयोग से, सतपुत्र होय ना एक ।
शोक मोह दोनों मिटैं, ऐसा करों विवेक ॥ ११ ॥
शत पुत्र इक पंचवा, दर्शन होत अविशेष ॥
निजानन्द आनन्द में, रज्जू सर्प जो देख ॥ १२ ॥
पूर्णब्रह्म स्वरूप मैं, सत्य भेद मत मान ॥
जीव ब्रह्म ये भेद जों, जलतरंगवत् जान ॥ १३ ॥
सर्व्वाधार तुम ब्रह्महैं, स्वल्प देख मत भेद ॥
शिवानन्द आनन्द हो, यही कहैं सब वेद ॥ १४ ॥
सजन सकारे जायंगे, नैन पडैंगे रोय ॥
दृढमन तुम ऐसा करो, जो कबहुं न रोना होय ॥ १५ ॥

शोकापहरण।

आया है सो जायगा, कबहुँ न रहता साथ ॥
प्रीती प्यारे तब करों, जो रोना होय दिनरात ॥ १६ ॥
जो रोनेको ना चहे, काहुसे नेह न लगाव ॥
सद्गुरु शरण होयकर, निजानन्दरस पाव ॥ १७ ॥
मूलाविद्या अटपटी, घट घट आन अड़ी ॥
किस किसकों समझाइये, यह कूवेंय भांगपड़ी ॥ १८ ॥
मूलाविद्या मिटगई, जब दर्शों जगदीश ॥
चाहैं तो घोट मुडायले, चाहैतो चक्की पीस ॥ १९ ॥
मन पक्षी तब लग उड़ै, विषय वासना माहिं ॥
ज्ञान बाजकी झपटमें, जबलग आवत नाहिं ॥ २० ॥
स्वास स्वास में ब्रह्मरटो, वृथा श्वास मति खोय ॥

ना जानूं इस श्वासका, यहीं अंत कहुँ होय ॥ २१ ॥
पलक फरकनी ना मिलै, मुख में रहैं गिरास ॥
मंदमती वो जानिये, जोकरै श्वासका विश्वास ॥ २२ ॥
सोहं सोहं श्वासको, जीव ब्रह्म एक जान ॥
ऐसी निष्ठा धारकर, जीवन्मुक्त मैं मान ॥ २३ ॥
जीवन्मुक्त यह कथन जो,सोभी मिथ्या जान ॥
बंधमोक्ष यह दोनों नहीं, अजात वाद प्रमान ॥ २४ ॥
पूरण करुणा गुरूकी, समझा उक्त जरूर ॥
निजानन्द को जानकर, मगनभया भरपूर ॥ २५ ॥
भूल बखेड़ा मिटगया, करना रहा न काम ॥
निजानन्द आनन्द में, अब करबैठा विश्राम ॥ २६ ॥
इस गुरूके चरणको, बंदूहूं कर जोरि ॥
निर्भयपद मुझको दिया,अबचिंता मिटगैमोरि॥ २७ ॥

इस गुरूके ध्यान से, मिटा सभी जंजाल ॥
शोकमुक्त मंदिर मिला, पीठ दिखाई काल ॥ २८ ॥
नारायण जो एक रस, चिद्घन व्यापक आप ॥
सोहं निश्चय जो करें, मिटे शोक संताप ॥ २९ ॥
अधिकारीपूर्णशाश्वतनन्दकी, सेवामेंरहाहजूर ॥
ब्रह्मज्ञान का प्रश्नउठाया, उपदेश करा भरपूर ॥ ३० ॥
पूर्ण ब्रह्म अविनाशि तू, यही बेद सबगाया ॥
शोकापहरणको जानकर, निजानन्द उनपाया ॥ ३१ ॥
ब्रह्मरूप तू निर्विकल्पहै, यही कहतहै शेषफणी ॥
चारोंवेद गुणगावैं तेरे, समझोहो क्षत्रिये वंसमणी ॥ ३२ ॥
अधिकारी अस और भी, कर विचार भरपूर ॥
शोकापहरण को धारकर, निर्भय होइ जरूर ॥ ३३ ॥

इति दोहे दिलभर श्रीमत्स्वामी महाराज सद्गुरुपूज्यपादाशिष्य शाश्वतानन्द गिरि कृत समाप्त